त्रिYA पत्रिKA

हाइकु व लघु कविताओं की पत्रिका

मानसून संस्करण

त्रिया पत्रिका - जुलाई | अगस्त २०२२ - तृतीय संस्करण

About the Cover Art

"The opening of doors is a mystic act: it has in it some flavor of the unknown, some sense of moving into a new moment, a new pattern of the human rigmarole. It includes the highest glimpses of mortal gladness: reunions, reconciliations, the bliss of lovers long parted"

- Christopher Morley

The cover photograph is a part of a collective 'doors', photographed in Chandani Chowk, Delhi by Tripti Shukla, an independent researcher, illustrator and documentary photographer.

"दरवाजे खोलना एक रहस्यमयी कार्य है: इसमें अज्ञात का स्वाद है, एक नए क्षण में जाने की भावना है। इसमें आकृति है नीरस और निरर्थक मानवीय कार्यों की, इसमें नश्वर आनंद की उच्चतम झलक शामिल है: पुनर्मिलन, मेल-मिलाप, लंबे समय से बिछड़े प्रेमियों का आनंद है"

- क्रिस्टोफर मॉर्ले

यह कवर फोटोग्राफ एक स्वतंत्र शोधकर्ता, चित्रकार और वृत्तचित्र फोटोग्राफर तृप्ति शुक्ला द्वारा खींची गई श्रृंखला 'दरवाज़े' का हिस्सा है। यह फ़ोटो दिल्ली के चांदनी चौक में ली गयी है।

हाइकु फ़ाउंडेशन का तहे दिल से शुक्रिया!

गोलियों की बौछार
सुन ना पाया मैं कभी
लोरी की आवाज़

तेजी

लौंगलिस्ट, टचस्टोन अवार्ड फ़ोर इंडिविजूअल पोयम, २०२१

तेजी सेठी

प्रबंध संपादक
संकल्पना, कवर व
आतंरिक डिज़ाइन

वैभव जोशी, प्रीती चाहर

सम्पादन (लघु कवितायें)
पत्रिका संशोधन

तेजी सेठी, प्रीती चाहर

सम्पादन व अनुवाद (हाइकु)

त्रिया पत्रिका - जुलाई । अगस्त २०२२ - तृतीय संस्करण

त्रिया में प्रकाशित कृतियों में से अधिकतम हाइकु, तनका व लघु कविताएँ इंग्लिश लैंग्वेज जर्नल्स में पूर्व प्रकाशित हैं। जर्नल्स के नामों का लिप्यन्तरण किया गया है। टीम त्रिया ने अनुवाद करते वक़्त इस बात का विशेष ध्यान रखा है - मूल काविताओं के सार को बनाए रखा जा सके। अनुवाद व प्रकाशन में हुई त्रुटियों के लिए टीम त्रिया क्षमा प्रार्थी है। मूल कृतियों का कॉपीराइट कवि का है, त्रिया केवल इन्हें अनुवाद कर प्रकाशित करने का स्वामित्व रखती है।

कॉपीराइट त्रिया

कवि चौपाल

अरविंदर कौर
डेबी स्ट्रेंज
नीना सिंह
अमृता प्रभु
त्वीट वार्न डौघ
लक्ष्मी अय्यर
रवि किरण
रमेश आनंद
रिचर्ड थॉमस
रीड हेप्वर्थ
काशियाना सिंह
कामिल फ़्लीख
द्वैपायन नायर
ताबिश नवाज़
रेखा मेहरा

तनका आर्ट

नीना सिंह
अरविंदर कौर

त्रिया उल्लेख

डेबी स्ट्रेंज

त्रिया अनुवाद

परेश तिवारी की हाईबुन ‘सेपरेशन’ का
हिन्दी अनुवाद - तेजी सेठी

फ़ोटो - कैनवा

हाइकु / तनका

अरविंदर कौर

वज़न तेरे
कमल नयनों का
मृत प्रसव

हाइकु डाइलॉग मई ११, २०२२

वापसी यात्रा
नाव की आहट में
माँ की राख

सीशोर हाइकु जर्नल #८ अप्रेल/मई २०२२

अवशेष विसर्जन
माँ को सितारों के आँचल में
समेटती लहरें
क्या हैं वो सपनों से परिचित
जो कभी उनकी आँखों में झिलमिलाते थे

रिब्बन्स विंटर, २०२२

अंग्रेजी साहित्य और मीडिया अध्ययन की पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, अरविंदर कौर प्रिंसिपल गवर्नमेंट कॉलेज डेरा बस्सी, पंजाब के रूप में सेवानिवृत्त हुईं हैं । उन्होंने लगभग एक दशक पहले माइक्रोपोएट्री लिखना आरम्भ किया व उनकी कविताएँ सभी प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं । उनका मानना है कि सीखना जीवन भर की एक प्रक्रिया है। उनकी माइक्रोपोएट्री की नवीनतम पुस्तक "फाअरफ्लाइस इन द रब्बल" है।

डेबी स्ट्रेंज

क्षणभंगुर
इक इक पंखुड़ी
विदा होते

विजेता हाइकु (कनाडा) २०१७
वैंकूवर चैरी ब्लॉसम फ़ेस्टिवल

महासागर
उग्र था कल रात
मगर आज,
भेजा है शांति प्रस्ताव
शंबुक और समुद्री घास का

प्रथम स्थान ,२०१८ सैन्फ़र्ड गोल्ड्स्टायन
इंटर्नैशनल तनका काँटेस्ट

तुम्हारे चरखे
की तीलियों के बीच
धूल भरा जाला
सोचा न था हमारा जीवन
इतनी जल्दी उधड़ जाएगा

प्रथम स्थान, २०१९ ब्रिटिश हाइकु
सोसायटी अवार्डस

डेबी स्ट्रेंज (कनाडा), एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित कवयित्री हैं जो अपनी लघु कविताओं व हाइगा के लिए जानी जाती हैं। उनके रचनात्मक जुनून उन्हें दुनिया व खुद के क़रीब लाते हैं। कृपया debbiemstrange.blogspot.com पर उसके संग्रह पर जाएँ।

नीना सिंह

अरेंज्ड विवाह
दुल्हन की मेहंदी
धीरे-धीरे लुप्त

#फ़ेमकुमेग, ३२, जनवरी २०२२

नीलकंठ
एक प्रतिबिंबित पल
नदी में

मॉडर्न हाइकु, ५३.१. फ़रवरी २०२२

भूरे पत्तों से टपकता
दोपहर का सन्नाटा
हमारे बीच का विराम
सम्भाले खड़ा है
  कुछ शब्द अनकहे

मूनबॉथिंग संस्करण २३, दिसम्बर २०२०

नीना एक बैंकर व कवि हैं, उनकी हाइकु, सेनर्यु, तनका, चेरिता, हाइगा और रेंगा को नियमित रूप से पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता रहा है। उन्होंने कविता की दो पुस्तकें स्वयं प्रकाशित की हैं - "विस्पर्स ऑफ द सोल" - द जर्नी विदिन व "वन ब्रेथ पोएट्री" । वह वंचित बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए एक गैर-लाभकारी संस्था चलाती हैं।

अमृता प्रभु

अगाध नीले
आसमान के नीचे
खेतों में पका दाना
हवा के स्वरों में
लहराती मेरी ओढ़नी

विराट पीपल
पत्तियों के बीच
ढलती रात
काली पोशाक पहने - कोयल
एक मधुर आवाज

टूटा छप्पर
जलता हुआ घर
लाल रक्त की धारा ...
कल से कल का परिचय
बीच में उलझा आज

अमृता प्रभु, एक कंप्यूटर इंजीनियर हैं जिन्होंने अपनी उम्र के तीसरे दशक के मध्य में कविताओं और कला के प्रति अपने प्रेम की खोज की। प्रकृति प्रेमी और खाना पकाने की शौकीन अमृता भारतीय होने पर स्वयं को भाग्यशाली मानती हैं और अपनी समृद्ध संस्कृति और विरासत को महत्व देती हैं। कला और कविताओं के लिए उनका प्यार उन्हें हाइकु , हाइगा और जापानी रूपों के संबंधित कविता के करीब ले कर गया। उनकी कई रचनाएँ प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। वह जीवन को जीने लायक बनाने वाले क्षणों के बारे में छोटे हैप्पी नोट्स बनाती हैं । उनका मानना है कि ८० साल की उम्र में, वह इन छोटे हैप्पी नोट्स को संजो रही होंगी।

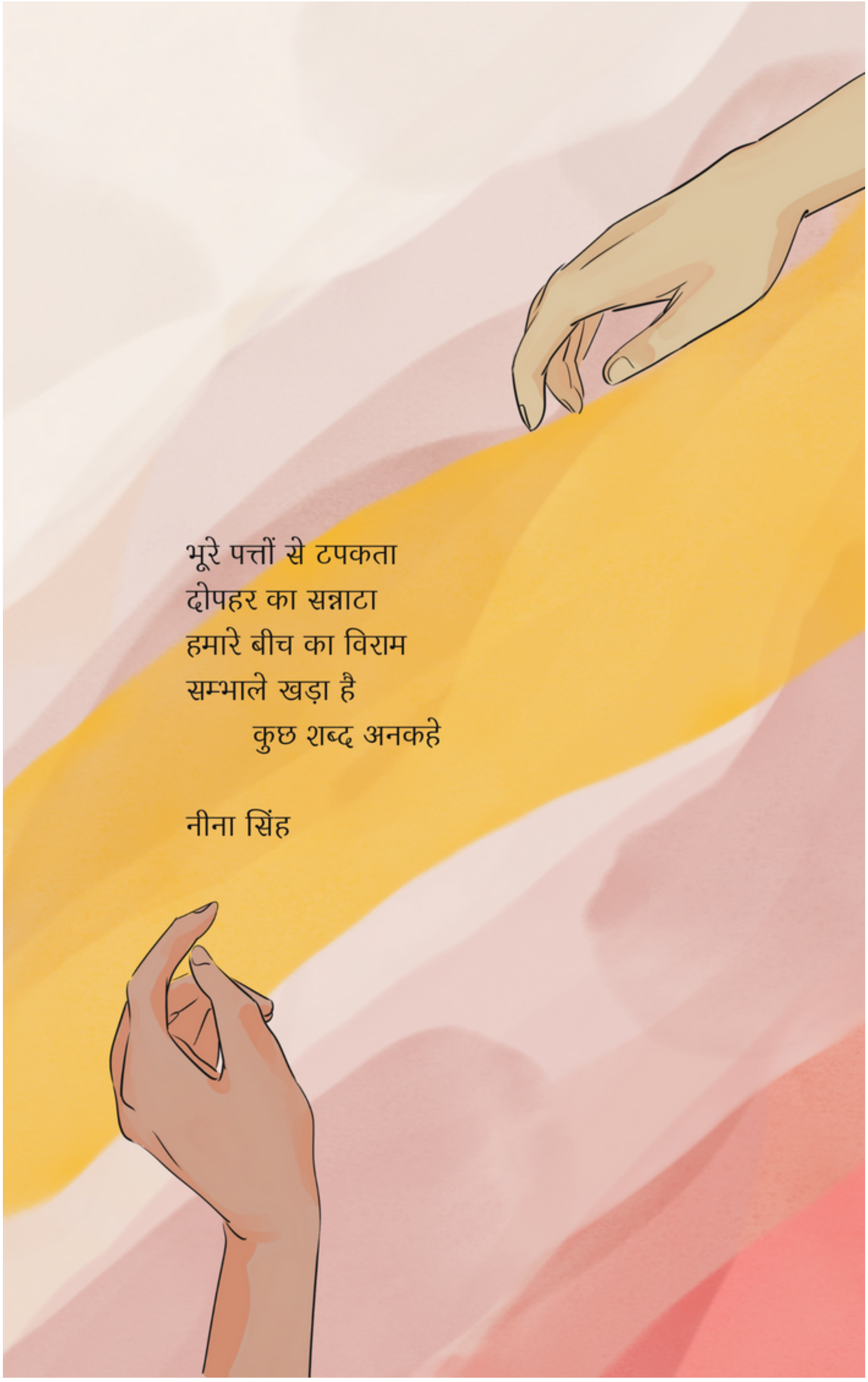

तनका आर्ट कॉन्सेप्ट : तेजी

त्वीट वार्न डीघ

बंद पिंजरा
एक पक्षी का रुदन
आजादी के लिए

स्थानीय खेल का मैदान
हॉपस्कॉच खेलता
उसके भीतर का बच्चा

तेज हवा
चाँद का कंपन
तालाब में

त्वीट वार्न डीघ मेल्बर्न ऑस्ट्रेल्या में रहती हैं। उनकी कृतियाँ हाइकु यूनिवर्स, टेक फ़ाइव, फ़ेल्ड हाइकु, स्कार्लेट ड्रैगनफ़्लाई, हाइकु फ़ाउंडेशन, कोल्ड मून जर्नल इत्यादि में प्रकाशित हुई हैं। वे बाग़वानी, गाने लिखना व ऐब्स्ट्रैक्ट पेंटिंग करना पसंद करती हैं।

लक्ष्मी अय्यर

मुख पढ़ना
पति के बारे में कहने को
कुछ नया नहीं

हाइकु कथा एडिटर्ज़ चौइस
संस्करण ६, अप्रेल २०२२

गर्भ में गर्भ ब्रह्मांडीय अंडा

हाइकु कथा संस्करण ५,
मार्च २०२२

काले बदरा
मंदिर पर मंडराते हुए
युद्ध पश्चात
बसंत की बयार में
दुख और पीड़ा के धब्बे

हाइकु कथा संस्करण ६, अप्रेल २०२२

लक्ष्मी अय्यर इस शब्दहीन कविता से मोहित लक्ष्मी अय्यर को अपने अनुभवों के माध्यम से कविताएं लिखना पसंद है। उन्होंने कला रमेश द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भाग लिया और कई प्रसिद्ध हाइकाई जर्नल्स के पन्नों में उनकी कविताओं को पाया। वह त्रिवेणी हाइकाई इंडिया से जुड़े होने में गर्व महसूस करती हैं क्यूंकि केवल यही एक ऐसी वेबसाइट है जो विशुद्ध रूप से हाइकाई के लिए बनी है।

रवि किरण

वर्षा के बाद
पत्तों से बहता
बूँदों का राग

पहली वर्षा
पत्तियाँ हरी हुई
फिर से

अचानक बारिश
मिट्टी का सौंधापन
कॉफ़ी में

रवि पेशे से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर प्रोफेशनल हैं। सब कुछ जापानी - बोनसाई से लेकर जापानी रसोई के साधन उन्हें अकर्षित करते हैं। हाइकु - रवि के लिए एक यात्रा है, जिसे वह अपने पेशेवर दिनचर्या के बीच में तनाव से मुक्ति का एक साधन मानते हैं। रवि की हाइकु कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

रमेश आनंद

शरद चंद्र
तुम जो छोड़ गए
उसके सहारे

अ हनड्रेड गॉड्ज़ १:२ मार्च, २०१२

प्रकाश द्युती
पहाड़ी की झोपड़ी से
टूटता तारा

द हेरोंस नेस्ट वॉल्यूम १७, न० १ मार्च, २०१५

वर्ष का अंत
अपने एक हिस्से से
पुनर्मिलन

द हेरोंस नेस्ट वॉल्यूम १६, न० १ मार्च, २०१४

सीमा पार
सब कुछ नया लगता है
सिवाय
इस अकेलेपन के जो
तुम्हारे बिना होने में है

ऐट्लस पोइटिका स्पेशल इंडीयन संस्करण सितंबर, २०१५

.

रमेश आनंद का हाइकु व सम्बंधित शैली लिखने का जुनून एक दशक पुराना है। वे निजी व व्यावसायिक ज़िंदगी में बहुआयामी विकास प्राप्त कर चुके हैं। न्यू बोर्न स्माइल्ज़ (यंग राइटरस अवार्ड के लिए नामांकित) के लेखक रमेश अपनी हाइकु के लिए विश्व प्रसिद्ध है व कई पुरस्कारों से सम्मानित किए गए हैं। वे चेन्नई में रहते हैं और हाइकु, सेनरयु, तनका व हाइगा लिखते हैं। उनका कार्य https://rrameshanand.wordpress.com/ पर पढ़ा जा सकता है।

रिचर्ड थॉमस

वही चट्टान
कार्प का अलग नदी
में जागना

बी एच एस मेम्बर्ज़ ऐन्थॉलॉजी, २०२१

अंगूर का बाग
तितलियों की उड़ान
उत्कर्ष पर

ताजमहल रिव्यू

मंद पवन
लम्बी घास के बीच
बकरी के कान का
श्वेत सिरा

द हेरोंस नेस्ट सितम्बर, २०२१

रिचर्ड थॉमस अपनी बेटी के साथ ब्रिटेन के प्लायमाउथ में रहते हैं। उनकी कविताएं और हाइकु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके दो कविता संग्रह, 'द स्ट्रेंजस्ट थैंक्यू' और 'ज़ायगौट पोअम्ज़' क्रमशः २०२१ और २०१५ में कल्चर्ड लामा द्वारा प्रकाशित किए गए थे। रिचर्ड को २०२१ में यूरोपीय शीर्ष १०० हाइकु लेखकों के लिए चुना गया था।उन्हें ऑनलाइन पर पढ़ा जा सकता है।

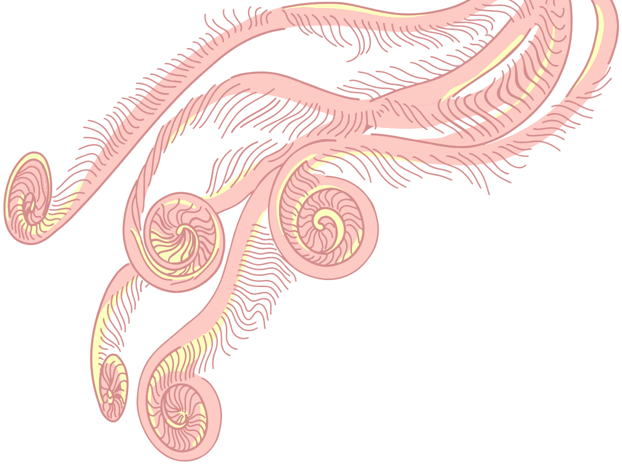

भँवरों की थाप पर लहराते बनफ़ूल

रीड हेप्वर्थ

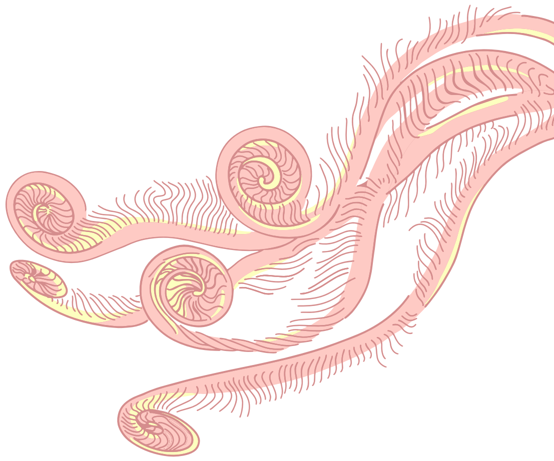

हाइकु रीड, आर्ट तेजी

रीड हेपवर्थ, जॉर्डन नदी, (बीसी) के जंगल में एक छोटे से केबिन में रहती है, जहां वह यूकेलेली बजाती है और लघु कविता लिखती है।

काशियाना सिंह

सागर तट
खुले मुँह के शंख को
घर मिला

कमल पत्ते
नसों में बसती
विक्षिप्तता

समाधि स्तंभ
फूलों से प्रस्फुटित
झुका आकाश

बहता चाँद
मद्धम होती आवाज़
तुम्हारी

विक्षिप्तता, रेमिंगतन रिव्यू समर एडीशन २०२२

जब काशियाना लिख नहीं रही होतीं, तो वह हर दिन अपने TEDx टॉक थीम को जी रही होती हैं । वह वर्तमान में कविता संपादक के रूप में कार्य कर रही हैं । यावानिका प्रेस द्वारा उनकी चैपबुक क्रश्ड एन्टहिल्स १० शहरों का एक यात्रा वृतांत है । हाल ही में उनका एक नया काव्य संग्रह - वीमेन बाय द डोर प्रकाशित हुआ है।

कामिल प्रीख

तूफानी मौसम
सब कुछ गतिमान
लोग स्थिर

हाइकु ज़बोरनिक लद्बरेग, २०२२

मानसून से
मानसून तक
रेल यात्रा

हाकारा संस्करण 15: यात्रा

नींद के दौरान
घाटी में विचरण
सुबह का कोहरा

प्रेज़ेन्स ७२

कामिल प्रीख पोलैंड में पैदा हुए थे और वह वर्तमान में लुबेक, जर्मनी में रहते हैं । वह हाइकु और मुक्त छंद कविताएं लिखते हैं। उनके कार्यों को कई पोलिश, जर्मन और अंग्रेजी भाषा की इंटरनेट और मुद्रित पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया है जैसे फ्रॉगपोंड, असाही शिम्बुन सोम्मेर्ग्रस , हेलिकोप्टर , स्त्रोना क्ष्ज़्जना, द्रोबिअज्गी इत्यादि ।

अवशेष विसर्जन
माँ को सितारों के आँचल में
समेटती लहरें
क्या हैं वो सपनों से परिचित
जो कभी उनकी आँखों में झिलमिलाते थे

अरविन्दर कौर

तनका आर्ट कॉन्सेप्ट : तेजी

द्वैपायन नायर

उच्च ज्वार की
प्रतीक्षा करते
हमारे पदचिन्ह

हाइकु इन ऐक्शन जून ८ - जून १४

खुशबू में गुम
हरसिंगार की
सफ़ेदी

हाइकु डाएलॉग जून, २०२२

भीड़ भरी बस
सर पर लगे नारियल तेल
का स्वाद
मेरे होठों पर

हाइकु कथा, जून संस्करण

भारत के असम के सिलचर शहर के रहने वाले द्वैपायन नायर हाइकु कवि हैं। वह माइक्रोपोएट्री लिखते हैं, ज्यादातर हाइकु और तनका कविताएँ। उनकी कृतियों को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय जर्नल्ज़ जैसे हाइकु फाउंडेशन - हाइकु डायलॉग, निक वर्जिलियो हाइकु फाउंडेशन - हाइकु इन एक्शन और फ्रेशऑउटमैग में स्थान मिला है। उन्हें हाइकुनिवर्स, कोल्ड मून जर्नल और त्रिवेणी हाइकाई इंडिया के प्रतिष्ठित मासिक हाइकु कथा में भी प्रकाशित किया गया है।

तबिश नवाज़

बारिश का एक दिन

ये पत्ते
बारिश को चख़ते
बूँद - बूँद
          दिन भर
चाँदी से चमकते

लौटूँगा अपने घर को
नंगे पैर, सिर छिपाए
बातों मे होगा नमक समुद्री
          जेब में रेत गीली
आँखों में क़िस्से समाये

पानी सा भरा है अंदर
क्यूँ कुछ
डूबता नहीं
जलती है आग भीतर
मगर कुछ सूखता नहीं

तबिश आईआईटी मुंबई में पर्यावरण विज्ञान और अभियांत्रिकी पढ़ाते हैं। उन्होंने एक लघु-कथा संग्रह ओपनिंग क्लाउड्स, फ़र्मेंटेड रेन (हवाकल, २०२०) प्रकाशित किया है। उनकी लघु कथाएँ, कविताएँ और निबंध नीदरलैंड क्वार्टरली, मद्रास कूरियर, द बॉम्बे रिव्यू, वूलगैदरिंग रिव्यू, द पंच मैगज़ीन, फ़्लैश फिक्शन मैगज़ीन, शिमर स्प्रिंग एंथोलॉजी और इयरबुक ऑफ़ इंडियन पोएट्री इन इंग्लिश २०२१ व कई अन्य स्थानों पर प्रकाशित हुए हैं।

रेखा मेहरा

बाहर मेघ मल्हार
भीतर गेंदा चमेली की महक
हर शख्स
                    नए अंदाज में
समय से बेखबर

माँ ...
तुम्हारे जाने के बाद
ना चिट्ठी ना आशीर्वाद
डाकिया भी मेरी गली
का रास्ता भूला

राह में
इतना मत डूबो दोस्त
हर सदी में यही राहें
पुराने नए पदचिन्ह
बनते मिटते चले जाएंगे

रेखा मेहरा एक काव्य संग्रह 'जिंदगी तेरी धूप छाँव' की लेखिका हैं। रेखा मुंबई में रहती हैं, वह बनारस में पैदा हुई, दिल्ली में पली-बढ़ी। उन्होंने इतिहास में दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की व प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। वह सरल ज़िंदगी व दूसरों के लिए मन में करुणा और सम्मान रखने में विश्वास रखती हैं।

त्रिया उल्लेख

महासागर
उग्र था कल रात
मगर आज,
भेजा है शांति प्रस्ताव
शंबुक और समुद्री घास का

प्रथम स्थान २०१८ सैन्फ़र्ड गोल्ड्स्टायन इंटर्नैशनल तनका कॉंटेस्ट

डेबी की तनका प्रकृति की भावनाओं को सम्मानित करती है। एक दिन महासागर का कोप अपने चरम पर पहुंच जाता है, लेकिन अगले ही दिन वह यह जलमग्न शंख और मोलस्क शांति प्रस्ताव स्वरुप भेंट करता है। मनुष्य के समान समुद्र सदा क्षमाशील है। अब यह हम पर निर्भर है कि हम इसकी सीमाओं और प्राकृतिक वनस्पतियों का सम्मान करते है या नहीं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य केवल प्रकृति के साथ तालमेल में रह सकता है।

फ़ोटो - कैनवा

त्रिया अनुवाद

परेश तिवारी की हाइबुन 'सैपरेशन'

विरह

उस दिन तुमने सब समेटा
तर्क, झगड़े

बड़े करीने से उन्हें तह किया
ग्लानि की करारी सिलवटों के साथ
तुमने उन्हें एक सूटकेस में भरा और चल दिए
पीछे छोड़ते हुए
खाली क़तारें हैंगरों की
जिस पर मैं लपेटता हूँ

लाचार चुप्पी
मैं हर रात अपने शरीर को छीलता हूँ

कसैली कॉफी
दिन के चाँद से अंकुरित होती
तुम्हारी अनुपस्थिति

पेशे से नौसेना अधिकारी, रचनात्मक लेखक, रुचि से इलस्ट्रेटर, परेश तिवारी लखनऊ की गलियों में पले-बढ़े। एक पुशकार्ट पुरस्कार नामांकित कवि परेश ने कविता के दो व्यापक रूप से प्रशंसित संग्रह प्रकाशित किए हैं। उनकी पहली पुस्तक, 'एन इंच ऑफ स्काई' २०१४ की में प्रकाशित हुई थी और इसे इंडियाना राइटर्स सेंटर, यूएसए में हाइकु और हाइबुन के लिए संसाधन सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है। 'रेनड्रॉप्स चेज़िंग रेनड्रॉप्स', हाइबन और हाइब्रिड कविताओं के उनके नवीनतम संग्रह को 'टचस्टोन प्रतिष्ठित पुस्तक पुरस्कार' - २०१७ में एक सम्मानजनक उल्लेख मिला है। परेश ने कई बार सहकर्मी-समीक्षा की गई हाइकु प्रतियोगिताओं को जीता है, और उनकी हाइकु को विभिन्न प्रतियोगिताओं और समीक्षाओं में मान्यता दी गई है। सबसे उल्लेखनीय २०१६ में व्यक्तिगत कविता के लिए उनकी हाइकु को 'टचस्टोन अवार्ड' के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया था।

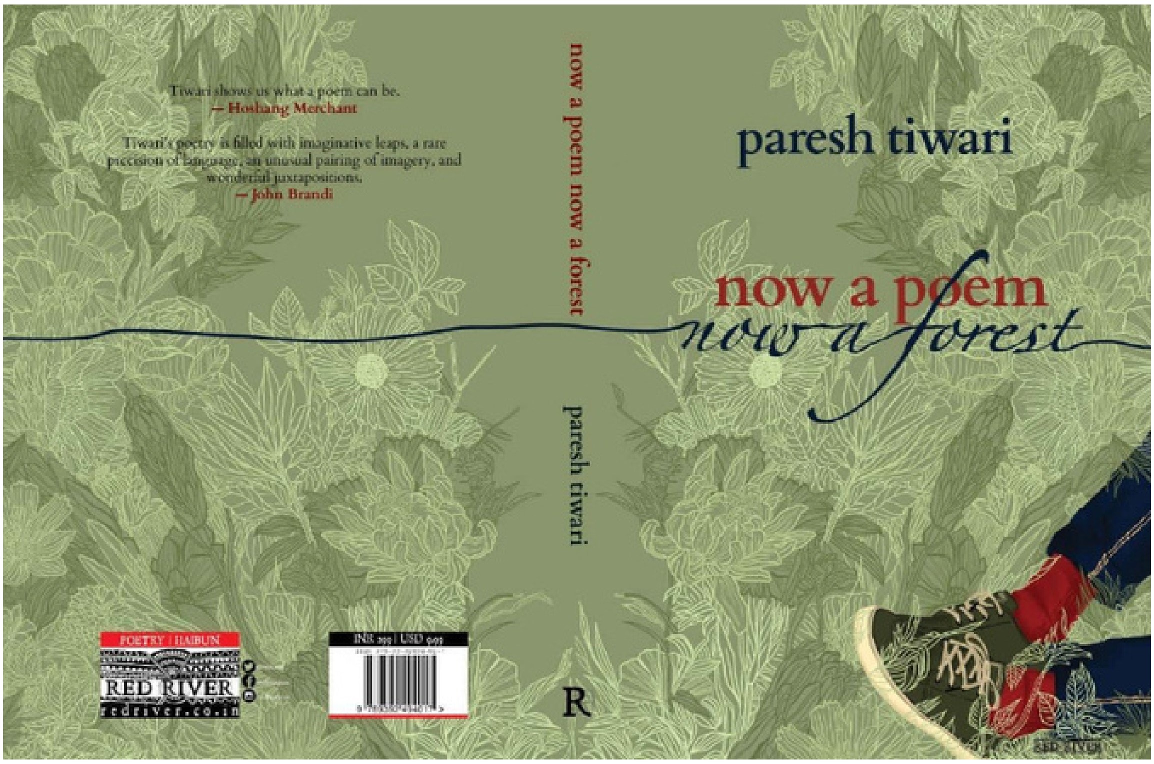

'नाउ अ पोयम नाउ अ फ़ॉरेस्ट' के अरण्य में विचरण करते मुझे परेश तिवारी की रचनाओं से रिसती देवदार की भीनी गंध ने मुग्ध किया। एक पल उनके शब्द सुबाबुल की छाती से लिपटी कोमल बेल की भाँति प्रतीत होते हैं दूसरे ही क्षण वे एक विशाल बरगद की खुरदुरी छाल बन जाते हैं। अपनी अपरंपरागत कल्पना के माध्यम से, तिवारी पाठकों को तड़प और तृष्णा की सुदूर भूमि पर ले जाते हैं।

शरणार्थियों की तरह, जैसा कि वे अपनी एक कविता में कहते हैं - मेरी कविताएँ शरणार्थी हैं, उनकी कविताओं ने कई समुद्रों का नमक चखा है। इस तरह के अनुभवी व परिपक्व संग्रह को तैयार करने में वर्षों लग गए होंगे, और अब जब वे उसे पाठकों के समक्ष लाए हैं तो उनके शब्द एक खारापन छोड़ जाते हैं पढ़ने वाले की ज़ुबान पर!

सबमिशन निर्देश

कृपया हमें triyamag@gmail.com पर दस अप्रकाशित हाइकु/सेनर्यु/तनका/लघु कविताएं मेल करें।

हमें आप प्रकाशित इंग्लिश लैंग्वेज हाइकु भी भेज सकते हैं। कृतियों के साथ पहले प्रकाशन क्रेडिटस शामिल होने चाहियें।

इंग्लिश लैंग्वेज हाइकु का हिंदी में अनुवाद इन हाउस एडिटर्स द्वारा किया जाएगा।

कविताएं पठन अवधि के अंत में साइट पर प्रकाशित होंगी।

पठन अवधि के बाद प्रस्तुत कविताएं केवल अगले संस्करण में प्रकाशित की जाएंगी।

पठन अवधि:

1 अक्टूबर - 15 अक्टूबर

1 जनवरी - 15 जनवरी

1 जून - 15 जून